

विक्रम संवत्-२०३६, श्रावण वद-७, सोमवार, ता. १-८-१९८०
वचनामृत-३५२, ३५३. प्रवचन नं. २२

‘द्रव्यसे परिपूर्ण महाप्रभु हूं, भगवान हूं, कृतकृत्य हूं’ ऐसा मानते होने पर भी ‘पर्यायमें तो मैं पामर हूं’ ऐसा महामुनि भी जानते हैं। गणधरदेव भी कहते हैं कि ‘हे जिनेन्द्र! मैं आपके ज्ञानको नहीं पा सकता। आपके एक समयके ज्ञानमें समस्त लोका लोक तथा अपनी भी अनंत पर्यायें ज्ञात होती हैं। कहां आपका अनंत-अनंत द्रव्य-पर्यायोंको जाननेवाला अगाध ज्ञान और कहां मेरा अल्प ज्ञान! आप अनुपम आनंदरूप भी संपूर्णतया परिणामित हो गये हैं। कहां आपका पूर्ण आनंद और कहां मेरा अल्प आनंद! इसी प्रकार अनंत गुणोंकी पूर्ण पर्यायरूपसे आप संपूर्णतया परिणामित हो गये हो। आपकी क्या महिमा करें? आपको तो जैसा द्रव्य वैसी ही एक समयकी पर्याय परिणामित हो गयी है, मेरी पर्याय तो अनंतपे भाग है।’

इस प्रकार प्रत्येक साधक, द्रव्य-अपेक्षासे अपनेको भगवान मानता होने पर भी, पर्याय अपेक्षासे-ज्ञान, आनंद, चारित्र, वीर्य इत्यादि सर्व पर्यायोंकी अपेक्षासे-अपनी पामरता जानता है। ३५२.

वचनामृत-३५२. ‘द्रव्यसे...’ मुख्य बात उठायी है। द्रव्य अर्थात् वस्तु अनादिअनंत, जो पर्याय एक समयकी पलटती है उसके पीछे द्रव्य त्रिकाल अपलटता है। ऐसा जो द्रव्य-वस्तु ‘द्रव्यसे परिपूर्ण...’ द्रव्यसे तो मैं परिपूर्ण हूं। ‘महाप्रभु हूं...’ आलाला..! द्रव्यसे-पदार्थसे-वस्तुसे-चैतन्य ज्ञायक पदार्थसे-ज्ञायकभावसे तो मैं परिपूर्ण महाप्रभु हूं। आलाला..! प्रत्येक आत्माको ऐसा है। प्रत्येक प्रभु, उसका जो द्रव्य है वह महाप्रभु परिपूर्ण है। परिपूर्ण है और महाप्रभु है। आलाला..! यहां तो अपनी बात कही है न. हूं। ‘द्रव्यसे परिपूर्ण महाप्रभु हूं...’ हूं। ऐसे धर्मी-सम्यक्दृष्टिको यह भावना करनी। आलाला..!

‘भगवान हूं...’ द्रव्यसे तो भगवान हूं। भगवान और मेरे द्रव्यमें कोई इक नही है। आलाला..! ‘कृतकृत्य हूं...’ द्रव्यसे तो कृतकृत्य हूं। कुछ करने जैसा है, ऐसा द्रव्यमें नहीं है। वह तो पर्यायमें है। यह तो कृतकृत्य है। सब कार्य पूरे किये हैं। सब गुणोंकी शक्ति पूरी ही है। शक्ति। आलाला..! ऐसा मैं कृतकृत्य हूं। इस

प्रकार साधक श्रवणको यह भावना करनी. आलाहा..! 'कृतकृत्य हूं, ऐसा मानते होने पर भी...' ऐसा मानते होने पर भी 'पर्यायमें तो मैं पामर हूं,' आलाहा..! पर्याय कहां सर्वज्ञकी पर्याय और कहां मेरी पर्याय. अनंतगुना डेर है. पर्यायमें मैं पामर हूं. द्रव्यसे प्रभु हूं, पर्यायसे पामर हूं. आलाहा..! क्योंकि पर्यायमें जब तक परिपूर्णता नहीं होती, जब तक परिपूर्ण नहीं होती तब तक पामरता है. आलाहा..! 'ऐसा मानते होने पर भी पर्यायमें तो मैं पामर हूं,' आलाहा..! 'ऐसा महामुनि भी जानते हैं.' ऐसा महामुनि गणधर चार ज्ञान और चौदह पूर्वकी अंतर्मुहूर्तमें रचना करनेवाले, चार ज्ञान और चौदह पूर्वकी अंतर्मुहूर्तमें रचना करनेवाले गणधर भी ऐसा मानते हैं, ऐसा महामुनि भी मानते हैं. इसलिये कदा कि, महामुनि कौन? 'गणधरदेव भी कहते हैं...' आलाहा..!

अपनी अंतरकी सनातन वस्तु अनाद्विअनंत ध्रुवकी महिमा कभी आयी नहीं. सनातन परम सत्य, उसका भंडार अंदरमें भरा है. उसकी महिमा, मालात्म्य कभी आया नहीं. पर्याय पर अनाद्विसे भेद किया. आला..! अनाद्विसे पर्याय पर भेद किया. परंतु पर्यायके सिवा अंदर वस्तु भगवान परिपूर्ण है, उस पर दृष्टि दी नहीं.

'गणधरदेव भी कहते हैं कि 'हे विनेन्द्र!' हे परमात्मा! 'मैं आपके ज्ञानको नहीं पा सकता.' आपके ज्ञानको नहीं पा सकता. आपके ज्ञानकी परिपूर्णता को ही अखिल महिमा (है). सर्वज्ञकी पर्याय, ऐसी भाषा भले बोले, परंतु सर्वज्ञ एक समयमें को ही यमत्कारिक वस्तु है कि अपने सिवा सर्व लोकालोक भी (जाने), स्वयं स्वयंको भी जाने और उसको भी जाने. ऐसी को ही ताकत पर्यायकी ताकत (है). हे नाथ! आपकी पर्यायकी ताकतके आगे.. आलाहा..! 'मैं आपके ज्ञानको नहीं पा सकता.' आपके ज्ञानकी परिपूर्णता मैं पा सकता नहीं. आलाहा..! द्रव्य स्वरूप भगवान परिपूर्ण आत्मा कृतकृत्य, उसको मैंने पाया. परंतु आपकी पर्याय जो भगवानपर्याय है, उसको तो मैं नहीं पा सकता. अभी मेरी पर्यायमें पामरता है. आलाहा..!

नोंवी त्रैवेयक मिथ्यादृष्टि छोड़ गया. बहुत किया की और बहुत किया ऐसा माना. बहुत किया ऐसा माना. तब ज्ञानी कहते हैं कि मैं तो अभी पर्यायमें अनंतवे भागमें हूं. कहां परमात्मा और कहां मैं! स्वामी कार्तिकेयमें यह गाथा है. कार्तिकेयानुप्रेक्षा ग्रंथ है, उसमें एक गाथा है. समझिती अपनेको द्रव्यसे तो प्रभुके रूपमें स्वीकारते हैं, पर्यायमें पामरता मानते हैं. अरे..! मुझे बहुत करना बाकी है. मुझे बहुत करना (बाकी है). द्रव्य-ओरकी वृत्ति जुकाववाली दृशा, बहुत करनी है. मुझे बहुत बाकी है. आला..! मुनि भी ऐसा कहते हैं. द्रव्यदृष्टिसे भले मैं परिपूर्ण हूं, महाप्रभु

હું, કૃતકૃત્ય હું. પરંતુ પર્યાયમાં અભી મુજે બહુત કરના બાકી છે. મુનિ હુએ તો ભી. ત્રીન કષાયકા નાશ (હુઆ છે). ગણધર ચાર જ્ઞાન ઓર ચૌદહ પૂર્વકી રચના અંતર્મુદૂર્તમાં કરનેવાલે, વે ભી ઐસા માનતે હૈં કિ પ્રભુ! આપકી પર્યાય કરનેમાં મેં અભી પામર હું. આહાહા..! મુજે બહુત કરના બાકી છે. કહાં કેવલજ્ઞાન ઓર કહાં મતિજ્ઞાન. આહાહા..!

ધવલમાં લિયા છે, કિ જહાં સમ્યક્ મતિજ્ઞાન હુઆ, (વહ) કેવલજ્ઞાનકો બુલાતા છે. ઐસી ભાષા છે, કેવલજ્ઞાનકો બુલાતા છે, અરે..! પ્રભુ! આઓ. મેં અલ્પ જ્ઞાનમાં કબ તક રહું? મેરી ચીજ પ્રભુ મહાપ્રભુ ઓર પર્યાયમાં પામરતા, મેં કબ તક રહું? આહાહા..! પ્રભુતા પૂર્ણતા મહાપ્રભુ હું. વહ તો શક્તિ-વસ્તુકે સ્વભાવસે મહાપ્રભુ હું. પરંતુ પર્યાયમાં, પ્રભુ!

હું પામર શું કરી શકું એવો નથી વિવેક,
ચરણ શરણ ધીરજ નથી મરણ સુધીની છેક.

યહ શ્રીમદ્માં આતા છે. મરણ પર્યંત મુજમાં પૂર્ણ સ્થિરતા આવે, ઐસી મુજમાં અભી પામરતા છે. આહાહા..! યહાં તો સાધારણ કુછ કરે તો ઐસા હો જાય કિ બહુત કિયા. આહાહા..! બહુત અનંત બાકી છે, ભાઈ! ચાર જ્ઞાન ઉત્પન્ન હો તો ભી અનંતવે ભાગમાં અભી હુઆ, અભી તો અનંતગુના બાકી છે. આહા..! યદિ ઐસી દષ્ટિ હો તો ઉસે પર્યાયમાં દીનતા રહે, અભિમાન ન આયે. આહાહા..! મેં જ્ઞાનતા હું, મેંને બહુત શાસ્ત્ર પઢે હૈં, ઐસા પર્યાયમાં અભિમાન ન આયે. આહાહા..!

‘આપકે એક સમયકે જ્ઞાનમાં...’ હે જિનેન્દ્રદેવ! ‘આપકે એક સમયકે જ્ઞાનમાં સમસ્ત લોકાલોક તથા અપની અનંતી પર્યાયમાં...’ ક્યા કહા? દેખો! ક્યાંકિ પ્રત્યેક દ્રવ્યમાં પ્રગટરૂપ અનંતી પર્યાયમાં હોતી હૈં. અલ્પજ્ઞ પ્રાણીકો ભી અલ્પ અનંત પર્યાય રહતી છે. પર્યાયકી સંખ્યા તો અનંત છે, પરંતુ ઉસકી સામર્થ્યતા અપૂર્ણ છે. આહાહા..! સમકિતીકો ભી અનંતી પર્યાય, જિતને ગુણ છે ઉતની પર્યાય પ્રગટ છે. આહાહા..! એક પર્યાય નહીં, અકેલા સામાન્ય નહીં. સામાન્ય ત્રિકાલ જો કૃતકૃત્ય પ્રભુ તો ત્રિકાલ ધ્રુવ (હૈ). પરંતુ ઉસકા સ્વીકાર કરનેવાલી વર્તમાન એક સમયમાં અનંતી પર્યાય હૈં. અનંતી.. અનંતી.. અનંતી.. આહાહા..! સમય એક, પરંતુ પર્યાય અનંતી.. અનંતી.. અનંતી છે. જિતને ગુણ હૈં, ઉતની પર્યાય હૈં. પરંતુ ઉસ પર્યાયમાં પામરતા છે.

‘જ્ઞાનમાં સમસ્ત લોકાલોક તથા અપની અનંતી પર્યાયમાં...’ અનંત પર્યાય લી ન? પ્રગટ અનંતી પર્યાય છે. કેવલજ્ઞાનીકો ભી અનંતી પ્રગટ પર્યાય હૈં. આહાહા..! અરે..! નિગોદકા જીવ લો. એક શરીરમાં અનંત જીવ, ફિર ભી ઉસકી પ્રગટ પર્યાય

अनंत है. बराबर है? आलाला..! क्योंकि गुण अनंत हैं. तो पर्याय भी बाहर अनंत प्रगट है. अनंत पर्याय बिनाका कोई द्रव्य कभी होता ही नहीं. आलाला..! निगोदमें अक्षरके अनंतवें भागमें विकास है. फिर भी पर्यायकी संख्या अनंत है. आलाला..! क्योंकि गुण अनंत हैं. भले दिन है, कमजोर है, परंतु पर्यायकी संख्या अनंत हैं. आलाला..! क्योंकि प्रत्येक द्रव्यमें सामान्य गुण जो अनंत हैं, तो उसकी विशेष पर्याय बिना वह सामान्य रहता नहीं. आलाला..! निगोदमें अनंती पर्याय, अनंती.

यहां तो कहते हैं, हे नाथ! 'कहां आपका अनंत-अनंत द्रव्य-पर्यायोंको ज्ञाननेवाला अगाध ज्ञान और कहां मेरा अल्प ज्ञान!' आलाला..! विशेषमें प्रभु! बहुत ईर्ष है. सामान्यमें आप (और मैं) समान हैं. सामान्य अर्थात् द्रव्य स्वभाव, गुण स्वभाव-शक्ति स्वभाव, सत्का त्रिकावी सनातन सत्त्व, यह समान है. यह प्रत्येक प्राणी-प्रत्येक आत्माका समान है. निगोदसे लेकर सिद्ध, सबका समान है. आलाला..! पर्यायमें बहुत ईर्ष है. आलाला..! है पर्याय भले अनंतवी संख्या, परंतु उस पर्यायमें प्रभु! आपके आगे मैं अल्प हूं. जैसा गणधरदेव कहते हैं. 'अगाध ज्ञान और कहां मेरा अल्प ज्ञान!'

'आप अनुपम आनंदरूप भी...' अनुपम आनंदरूप भी 'संपूर्णतया परिणामित हो गये हैं.' क्या कहते हैं अब? आनंदके साथ मिलान करते हैं. आलाला..! आप अनुपम-उपमा न दे सके जैसा कोई अतीन्द्रिय आनंद.. आलाला..! द्रव्यका स्वभाव जो अतीन्द्रिय आनंद, उस आनंदरूप भी संपूर्णतया परिणामित हो गये हैं. आनंद भी आपको संपूर्ण परिणामित हो गया है. अनंती पर्यायमें आनंद भी एक पर्याय है. भगवानमें अनंती पर्याय प्रगट लुयी, उसमें आनंद भी एक पर्याय है. आनंद एक पर्याय संपूर्ण प्रगट लुयी है. आलाला..! 'संपूर्णतया परिणामित हो गये हैं. कहां आपका पूर्ण आनंद...' आलाला..! प्रभु! आपका कहां पूर्ण आनंद 'और कहां मेरा अल्प आनंद!' आलाला..! अतीन्द्रिय आनंद तो है. प्रगट अनंती पर्याय है. उसमें आनंद भी प्रगट पर्याय है. आलाला..! कहां मेरा अल्प आनंद और कहां आपका पूर्ण आनंद. आलाला..! धतनी नरमाई, निर्मानता. अभिमान न आनेकी यह चीज है. मेरी पर्यायमें और प्रभु! आपकी पर्यायमें अनंतगुना ईर्ष है. अनंतगुनी पर्याय आपमें लुयी हैं. आनंद भी आपका पूर्ण आनंद हुआ. प्रत्येक पर्याय पूर्ण हो गयी है. उसमें एक आनंद नामकी पर्याय भी आपकी पूर्ण हो गयी है. आलाला..! समझमें आया?

प्रभुको तो अनंत गुणकी अनंती पर्यायिं प्रगट पूर्ण हो गयी है. निगोदमें अंक जोको अनंत गुणकी अनंती पर्यायिं प्रगट हैं. परंतु अक्षरके अनंतवे भागमें. आलाहा..! बहुत अल्प. और कहां परमात्मा! उनकी पर्यायि. पर्यायि बिनाका द्रव्य तो कभी होता नहीं. आलाहा..! विशेष बिना अकेला सामान्य तो कभी होता नहीं. विशेष पर्यायि निगोदमें भी अनंती है और केवलज्ञानकी अनंती है. संख्यासे अनंती, परंतु सामर्थ्यमें अनंतगुना ईर्क. आलाहा..! कहां प्रभु मेरा आनंद और कहां प्रभु आपका आनंद! आलाहा..!

‘कहां आपका पूर्ण आनंद और कहां मेरा अल्प आनंद! इसी प्रकार अनंत गुणोंकी पूर्ण...’ जैसे आनंदकी अंक पर्यायि भी मेरी अल्प और आपकी अनंत, वैसे सब पर्यायि आपकी अनंत (प्रगट हो गयी है). है? ‘इसी प्रकार अनंत गुणोंकी पूर्ण पर्यायिइपसे आप संपूर्णतया परिणामित हो गये हो.’ पर्यायिमें परिणामित हो गये हैं. आलाहा..! यह परमात्मा! अंक द्रव्य, हां! अंक द्रव्य आत्मा. जैसे-जैसे अनंत परमात्मा. आलाहा..! ‘आपकी क्या महिमा करें?’ पूर्ण पर्यायिइपसे आप संपूर्णतया परिणामित हो गये हो. आलाहा..! ‘आपकी क्या महिमा करें? आपको तो जैसा द्रव्य वैसी ही अंक...’ आपको तो जैसा द्रव्य-वस्तु (है) ‘वैसी ही अंक समयकी पर्यायि परिणामित हो गयी है.’ आलाहा..! पूर्ण. जैसा कहते हैं. जैसा द्रव्य है, वैसी ही अंक समयकी पर्यायिमें परिपूर्ण परिणामित हो गयी है. बले अंक समय हो. आलाहा..! द्रव्य है वह तो अनंत.. अनंत.. अनंत.. अनंत.. गुणोंका पिंड (है). परंतु जैसा द्रव्य है, जितने अनंत गुण हैं, उतनी प्रगट पर्यायि परिणामित हो गयी है. अनंती पर्यायिं भगवानको परिणामित हो गयी हैं. आलाहा..! यह अरिहंतका रूप. एभो अरिहंताणं बोले, परंतु उनको गुण कितने, पर्यायि कितनी, पर्यायिका सामर्थ्य कितना, वह मावूम नहीं. आलाहा..!

‘मेरी पर्यायि तो अनंतवे भाग है.’ आलाहा..! अनंतवे भाग है. आलाहा..! आपको जो आनंदकी पूर्ण पर्यायि हो गयी, उससे तो मेरी आनंदकी पर्यायि अल्प है, परंतु सब पर्यायि, आनंदके साथ जितनी पर्यायि अनंत गुणकी है, सब आपकी पूर्ण है और मेरी अल्प है. मेरी भी सब गुणकी पर्यायि तो है, (लेकिन) अल्प है. क्योंकि द्रव्य है वह कभी पर्यायि बिना नहीं रहता. तो मेरेमें पर्यायि है, परंतु प्रभु! आपके आगे तो अनंतवे भाग है. आलाहा..! संख्यासे अनंत, सामर्थ्यसे अल्प. आलाहा..! प्रभुका पर्यायिका सामर्थ्य अनंत, संख्या भी अनंत. पर्यायि अनंत और उनकी अंक-अंक पर्यायिका सामर्थ्य भी अनंत. आलाहा..! यह अरिहंत, जिनेन्द्र

देव! आलाला..!

‘ईस प्रकार प्रत्येक साधक...’ प्रत्येक साधक. चौथे गुणस्थानसे लेकर प्रत्येक साधक. ‘द्रव्य-अपेक्षासे अपनेको भगवान मानता होने पर भी,...’ आलाला..! वस्तु अपेक्षासे अपनेको भगवान मानता होने पर भी. आलाला..! साधकञ्च-मोक्षका साधकञ्च-मोक्षमार्गका साधकञ्च-अपनेको.. आलाला..! भगवान मानता होने पर भी. द्रव्यसे तो मैं भगवान परिपूर्ण हूँ. ‘पर्याय-अपेक्षासे ज्ञान, आनंद, चारित्र, वीर्य ईत्यादि...’ ईत्यादि अनंत-अनंत पर्याय प्रभु! आलाला..! आपके द्रव्य-गुणकी बात तो क्या करनी! क्योंकि द्रव्य-गुण तो मेरा भी ऐसा है. आलाला..! लेकिन पर्याय प्रगट लुयी, उसका क्या कलना? आपकी पर्याय प्रभु! अनंतगुनी प्रगट हो गयी है. आलाला..! ‘सर्व पर्यायोंकी अपेक्षासे-अपनी पामरता ज्ञानता है.’ कौन? साधक. प्रत्येक साधक. चौथे, पांचवे, छठे. बादमें तो ध्यानमें होता है. आलाला..!

आत्मज्ञान हुआ, आत्माको भगवान माना. परंतु पर्यायमें तो पामरता मानी. आलाला..! प्रत्येक साधक ईस प्रकार अपनेको द्रव्यसे भगवान, पर्यायसे पामर (मानता है). आलाला..! यह श्लोक स्वामी कतिक्कियमें है. मूल श्लोक. साधकञ्च अपनेको परिपूर्ण प्रभु मानते हैं, द्रव्य-अपेक्षासे. आलाला..! वस्तु-अपेक्षासे तत्त्वका जो सत् है, चैतन्य सत् है, सत् है, वह सत् है तो परिपूर्ण है. आलाला..! भले अनंत गुण हैं, परंतु अनंत गुण सत् परिपूर्ण है. द्रव्य-अपेक्षासे प्रत्येक ज्वमें. पर्यायमें पामरतामें ईक है. आलाला..! अरे..! उसने कब उसका विचार किया है कि मैं क्या हूँ? मेरी सत्ता अनंत. भगवानकी सत्ता है वैसी मेरी है. परमात्माकी द्रव्यकी जैसी सत्ता है, ऐसी सत्ता मेरी है. ऐसा ही सत्त्व मेरा है. पर्यायमें मेरी पामरता है, यह मैं ज्ञानता हूँ. आलाला..!

‘सर्व पर्यायोंकी अपेक्षासे-अपनी पामरता ज्ञानता है.’ देजो! ‘आनंद, चारित्र, वीर्य ईत्यादि सर्व पर्यायोंकी...’ अनंती पर्यायके आगे.. आलाला..! उसकी अपेक्षासे ‘अपनी पामरता ज्ञानता है.’ आलाला..! द्रव्य और पर्याय, बस दो. दूसरी कोई चीज तो मेरेमें है नहीं. आलाला..! दो सिवा तीसरी चीज तो यहां है नहीं. दोमें अक प्रभु है और अक पामर है. आलाला..! अनंत-अनंत गुण, जिसकी संख्याका पार नहीं, उतनी पर्याय प्रगट है. जितने गुण हैं, उतनी पर्याय प्रगट है. अनंती पर्याय प्रगट है. सामान्य त्रिकाल जो अनंत गुणरूप है, उसकी अनंती पर्याय सब ज्वको प्रगट है. अज्ञानीको भी अनंती पर्याय प्रगट है. आलाला..! परंतु विपरीत. मान्यता विपरीत. मैं परका कर्ता हूँ, परसे मुझे लाभ होता है, परको मैं लाभ

दे सकता हूँ. आह्लाहा..! परको लाभ नहीं दे सकता? आह्लाहा..! तो शास्त्र क्यों कलने? कौन कलता है? प्रभु! उस वक्त भाषाकी पर्याय होनेकी है तो होती है. आत्मासे होती नहीं. आह्लाहा..! जिस समय जे भाषाकी वर्णणा, जिस प्रकार परिणामित होनेवाली है उस समय उस रूप परिणामती है. आह्लाहा..! आत्मा उस जडकी पर्यायका कर्ता नहीं. हां, वह अनन्ती-अनन्ती पर्यायका जननेवाला है. जननेमें कभी कुछ नहीं, कर्तमें अके रागका भी कर्ता नहीं. रागके कणका भी कर्ता नहीं. आह्लाहा..! ऐसी बात. आह्लाहा..! 'अपनी पामरता जनता है.' आह्लाहा..! उपर (पूरा हुआ). 343. है न 343?

सर्वोत्कृष्ट महिमाका भंडार चैतन्यदेव अनादिअनंत परमपारिणामिकभावमें स्थित है. मुनिराजने (नियमसारके टीकाकार श्री पद्मप्रभमलधारीदेवने) इस परमपारिणामिकभावकी धुप लगायी है. यह पंचम भाव पवित्र है, महिमावंत है. उसका आश्रय करनेसे शुद्धिके प्रारंभसे लेकर पूर्णता प्रगट होती है.

जो मलिन हो, अथवा तो अंशतः निर्मल हो, अथवा जो अधूरा हो, अथवा जो शुद्ध अथवा पूर्ण होने पर भी सापेक्ष हो, अधुप हो और त्रैकालिक-परिपूर्ण-सामर्थ्यवान न हो, उसके आश्रयसे शुद्धता प्रगट नहीं होती; इसलिये औद्यिकभाव, क्षायोपशमिकभाव, औपशमिकभाव और क्षायिकभाव अलंजनके योग्य नहीं हैं.

जो पूरा निर्मल है, परिपूर्ण है, परम निरपेक्ष है, धुप है और त्रैकालिक-परिपूर्ण-सामर्थ्यमय है-ऐसे अलंभेड अके परमपारिणामिकभावका ही-पारमार्थिक असली वस्तुका ही-आश्रय करने योग्य है, उसीकी शरण लेने योग्य है. उसीसे सम्यग्दर्शनसे लेकर मोक्ष तककी सर्व दशाओं प्राप्त होती हैं.

आत्मामें सहजभावसे विद्यमान ज्ञान, दर्शन, चारित्र, आनंद इत्यादि अनंत गुण भी यद्यपि पारिणामिकभावरूप ही हैं तथापि वे चेतनद्रव्यके अके-अके अंशरूप होनेके कारण उनका भेदरूपसे अवलंजन लेने पर साधकको निर्मलता परिणामित नहीं होती.

इसलिये परमपारिणामिकभावरूप अनंतगुणस्वरूप अलंभेड अके चेतनद्रव्यका ही-अण्ड परमात्मद्रव्यका ही-आश्रय करना, वहीं दृष्टि देना, उसीकी शरण लेना, उसीका ध्यान करना, कि जिससे अनंत निर्मल पर्यायें स्वयं मिल उठें.

ईसलिये द्रव्यदृष्टि करके अण्ड अेक ज्ञायकउप वस्तुको लक्षमें लेकर उसका अवलंबन करो. वही, वस्तुके अण्ड अेक परमपारिणामिकभावका आश्रय है. आत्मा अनंत गुणमय है, परंतु द्रव्यदृष्टि गुणोंके भेदोंका ग्रहण नहीं करती, वह तो अेक अण्ड त्रैकालिक वस्तुको अभेदउपसे ग्रहण करती है.

यह पंचम भाव पावन है, पूजनीय है. उसके आश्रयसे सम्यग्दर्शन होता है, सख्या मुनिपना आता है, शांति और सुख परिणामित होता है, वीतरागता होती है, पंचम गतिकी प्राप्ति होती है. ३५३.

३५३. 'सर्वोत्कृष्ट महिमाका भंडार...' आलाहा..! सर्वोत्कृष्ट-सर्वसे उत्कृष्ट महिमाका भंडार. आलाहा..! 'चैतन्यदेव...' आलाहा..! जगतके चाले जितने भंडार हो, हिरा-माणिक्यसे लाखों योजन भरे हो, लाखों योजनमें हिरा-माणिक्य (भरे हो), अरे..! असंख्य योजनमें (हो). स्वयंभूरमाणिक्यसमुद्र. स्वयंभूरमाणिक्यसमुद्रमें असंख्य योजनमें हिरा और माणिक्य भरे हैं. नीचे रेती नहीं है. आलाहा..! उसके आगे यहां 'सर्वोत्कृष्ट महिमाका भंडार...' में हूं. स्वयंभूरमाणिक्य समुद्रमें असंख्य योजनमें अकेले पत्थरके रत्न भरे हैं. पत्थरके रत्न. यह चैतन्य रत्न. आलाहा..!

उसके गुणोंकी संख्या और उसकी पर्यायिकी संख्या विस्मयकारी है, आश्चर्यकारी है. कभी लक्ष्यमें लिया नहीं. जितनी महिमा है, उतनी महिमा कभी की नहीं. उतनी महिमा करे तो सर्वोत्कृष्ट सम्यग्दर्शन दुखे बिना रहे नहीं. आलाहा..! समझमें आया? सर्वोत्कृष्ट महिमाका भंडार. आलाहा..! पूरी दुनियाका भंडार हो, पैसा, लक्ष्मी, ईश्वर-कीर्ति, स्वयंभूरमाणिक्य समुद्र असंख्य योजनमें है. आलाहा..! असंख्य योजनमें. ढाई द्विपमें जितने द्विप-समुद्र हैं, दूसरे समुद्रसे यह समुद्र तीन योजन अधिक है. अेक ही. क्या कल वल? जितने दरिया-समुद्र असंख्य हैं, उसकी संख्याके योजनसे अेक स्वयंभूरमाणिक्य समुद्रकी, सर्व असंख्य द्विप-समुद्रके योजनसे, तीन योजन अधिक है. सबसे तो समान, परंतु तीन योजन अधिक है. आलाहा..! वह अकेले रत्नसे भरा है. वहां मनुष्य नहीं है, नहीं तो वहां लेने जाये. पशु है, पशु. मच्छ, मगरमच्छ. अरे..! उसमें समकित्ती असंख्य है. स्वयंभूरमाणिक्य समुद्रमें. देखते हैं, परंतु पत्थर देखते हैं. मेरे आत्माकी चीजके आगे पूरी दुनिया पत्थर है, पत्थर. मैं अेक आत्मा और पूरी दुनिया मेरे ज्ञानमें अेक समयका ज्ञेय. आलाहा..! मैं अेक निश्चयस्वरूप, पूरा लोकालोक मेरी अपेक्षासे सब व्यवहार है. आलाहा..! स्वआश्रय अेक निश्चय, पराश्रयसे जितने विकल्प उठे, वहांसे लेकर पूरा लोकालोक, पंच परमेष्ठी वह भी

व्यवहार है. अेक ओर अेक में आत्मा निश्चय अेक ओर उसके सिवा अनंत आत्मा और अनंत रणकण, अनंत परमेश्वर, सिद्ध.. आलाला..! उससे भी सर्वोत्कृष्ट भंडार में हूं. आलाला..! है तो सबमें ँतनी (सर्वोत्कृष्टता).

‘सर्वोत्कृष्ट महिमाका भंडार चैतन्यदेव...’ चैतन्यदेव. आलाला..! पामर प्राणीको कहते हैं कि तू चैतन्यदेव (है). आलाला..! चैतन्य भगवान, चैतन्यदेव तू है, प्रभु! आलाला..! तुझे अेक बीडी पीनेमें संतोष हो जाता है. तो अनंत-अनंत गुणका भंडार चैतन्यदेव, तेरी दिव्य शक्तिका पार नहीं, नाथ! और तू उसकी महिमामें आ जाये, अेक बीडी पीअे उसमें. तवप लगी है. बहुत अच्छा. तू देवका देव चैतन्यदेव. आलाला..!

‘अनादिअनंत...’ चैतन्यदेव अनादिअनंत. है.. है उसकी आदि कहां? है उसका अंत कहां? और है वह अनंत स्वभावसे जावी कहां? वह लेते हैं, देओ! ‘अनादिअनंत परमपारिणामिकभावमें स्थित है.’ वह भाव लिया. पहले काव लिया. चैतन्यदेव अनादिअनंत-वह काव. और मेरा भाव-‘परमपारिणामिकभावमें स्थित है.’ अकेला पारिणामिक नहीं. अकेला पारिणामिक तो पर्यायको भी कहते हैं. यह तो परमपारिणामिकभाव. आलाला..! चैतन्यदेव अनादिअनंत अपने पारिणामिकभावमें स्थित है. आलाला..! अपना परमपारिणामिक स्वभाव. पारिणामिक अर्थात् सहज स्वभाव. परम सहज स्वभाव अनंती-अनंती शक्तिका भंडार, अैसा परमस्वभाव सहज परिणाम, उसमें मैं स्थित हूं. आलाला..! है?

मैं स्थित हूं, अैसा निर्णय पर्याय करती है. निर्णय पर्याय करती है. परंतु पर्याय कहती है कि मैं यह हूं. अनादिअनंत परमपारिणामिकभावमें मैं स्थित हूं. आलाला..! यह शब्द सुने भी नहीं हो. पैसेके आगे कहां सुने? आलाला..! ‘सर्वोत्कृष्ट महिमाका भंडार चैतन्यदेव अनादिअनंत...’ चैतन्यदेव सर्वोत्कृष्ट महिमाका भंडार ‘परमपारिणामिकभावमें स्थित है.’ परमस्वभाव त्रिकावीमें स्थित है. वह पर्यायमें भी आता नहीं. क्या कहा, समझमें आया? त्रिकावी परमपारिणामिक स्वभाव. आलाला..! जे अनादिअनंत महा भंडार, वह अपनी पर्यायमें भी आता नहीं. वह तो पंचम पारिणामिक स्वभाव, सहज त्रिकावी ज्ञायक स्वभाव, उसमें स्थित है. तू मान तो भी अैसा है, न मान तो भी अैसा स्थित है. आलाला..! आलाला..!

‘परमपारिणामिकभावमें स्थित है.’ भाव लिया है. काव तो अनादिअनंत. क्षेत्र तो अपनेमें है, भाव यह है. आलाला..! द्रव्य तो वस्तु है, क्षेत्र अपनेमें असंख्य प्रदेश है, काव अनादिअनंत, भाव परमपारिणामिकभाव. आलाला..! ँसमें मैं स्थित

हूँ. अनादिअनंत परमपारिष्णामिकभावमें स्थित हूँ. अभी तो भविष्य आया नहीं है न? भूतकाल तो चला गया न? चला गया और नहीं आया हो, मैं तो अनादिअनंत (हूँ). आदि और अंत बिना अपना पंचम पारिष्णामिक स्वभाव, जो सर्वोत्कृष्ट गुणका भंडार है, उसमें स्थित हूँ. आह्लाहा..! कितनों तो यह भाषा सुनी न हो संप्रदायमें. आह्लाहा..! और विरोध करे.

मैं अस्ति वस्तु. मैं अस्ति-वस्तु. अनादिअनंत-काल. अपने क्षेत्रमें, पंचम पारिष्णामिकभावमें स्थित. आह्लाहा..! गजब बात! ऐसा पर्याय निर्णय करती है. पंचमभावमें कहां (निर्णय करना है?). मैं मेरे क्षेत्रमें अनादिअनंत कालमें... आह्लाहा..! परम ज्ञायक पंचमभाव, ज्ञायकभाव उसमें मैं स्थित हूँ. द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव चार आ गये. आह्लाहा..! ऐसी चीजके आगे कौन-सी चीजकी मलिमा करे? आह्लाहा..! ऐसा प्रभु.. आह्लाहा..! 'परमपारिष्णामिक भावमें स्थित है.' कौन? 'सर्वोत्कृष्ट मलिमाका भंडार चैतन्यदेव...' आह्लाहा..! वह मैं. आह्लाहा..!

'भुनिराजने (नियमसारके टीकाकार श्री पद्मप्रभमवधारीदेवने) 'ईस परमपारिष्णामिक भावकी धुन लगायी है.' नियमसार दोपहरको पढते हैं न. क्या उसमें परमपारिष्णामिक भावको गाया है! आह्लाहा..! वहां तक लेंगे, अभी आज आयेगा. परमपारिष्णामिक भाव आधार और द्रव्य आधेय. अरे..! क्या कहां? उसमें आयेगा. द्रव्य अर्थात् वस्तु-गुण, गुण. वहां द्रव्य कहां. त्रिकावी वस्तु है न. त्रिकावी गुणोंका आधेय और उसका आधार पंचम पारिष्णामिक भाव. आह्लाहा..! त्रिकावी परमभावके आधारसे वह गुण है. आह्लाहा..! कोई पर्यायके आधारसे या रागके आधारसे, निमित्तके आधारसे वह गुण है नहीं. आह्लाहा..! ऐसा मलिमावंत आत्मा सुना नहीं है. आह्लाहा..! अरे..! ज्वको स्वयंकी ज्ञतको छोडकर दूसरेकी मलिमाका पार नहीं. आह्लाहा..! अक कपडा अच्छा आये तो.. आह्लाहा..! जरीवाली अच्छी.. ओहोहो..! पुरणपोवी और लड्डु, पत्तरवेवियाके पकोडे घीमें तले हुअे आये (तो) भुश-भुश हो जय. अरे..! प्रभु! क्या है? प्रभु! वह तो मिट्टी है न. वह तो जड है न. आह्लाहा..! तेरे गुणभंडारके आगे वह तो जड है, प्रभु! उसकी तो कोई किमत नहीं है. आह्लाहा..! तेरे अक-अक गुणकी पर्यायकी किमतका पार नहीं. तो तेरे द्रव्य गुणकी किमतकी तो क्या बात करनी! आह्लाहा..!

ऐसा जो भगवान.. आह्लाहा..! उसे पद्मप्रभमवधारीदेवने 'ईस परमपारिष्णामिक भावकी धुन लगायी है.' जहां-तहां कारणपरमात्मा, कारणपरमात्मा, कारणपरमात्मा. आह्लाहा..! कारणज्व. ऐसा शब्द लिया है. पद्मप्रभमवधारीदेव. आह्लाहा..! कारणज्व.

यह क्या? कारणज्व और कार्यज्व? कहीं शब्द सुने न हो. त्रिकावी भगवान परमात्मा अनादिअनंत गुणका भंडार, परिपूर्णा गुणका भंडार वह कारणज्व, वह कारणज्व, वह कारणआत्मा, वह कारणपरमात्मा, कारणभगवंत. उसमेंसे पर्याय पूर्ण प्रगट हो सर्वज्ञ परमात्माकी, वह कार्यपरमात्मा, वह कार्यज्व. वह कारणज्व, यह कार्यज्व. आलाहा..!

ज्वमें कारण और कार्य. दूसरी चीज कारण और आत्मा कार्य, वही तो दूर रह गया. अथवा आत्मा कारण और दूसरी वस्तु कार्य, आत्मा करे और बनाये. आलाहा..! वह तो कुछ है ही नहीं. अक चीज दूसरी चीजको छूती नहीं तो करे किसको? आलाहा..! यहां तो कहते हैं, तेरा भगवान कारणज्व आलाहा..! जिसे कारण पारिणामिक कहा, कारण पारिणामिक स्वभाव. कारण परमपारिणामिक स्वभाव. आलाहा..! उसकी धुन लगायी है, नियमसारमें. जगह-जगह गाथामें कारणपरमात्मा, कारणपरमात्मा... उसे बतानेको कारणज्व, कारणपरमाणु ऐसा पाठ लिया है. कारणपरमाणु और कार्यपरमाणु. प्रत्येक स्कंध कारण ईसलिये कारणपरमाणु. और स्कंधमेंसे भिन्न पद ज्ञय वह कार्यपरमाणु. आलाहा..! यह कारणपरमात्मा त्रिकाल और उसकी पर्याय पूर्ण हो ज्ञय वह कार्यपरमात्मा, वह कार्यज्व. आलाहा..! अरेरे..! ज्वकी व्याख्या सुनी न हो.

ऐसा आत्मा तीन लोकके नाथ परमात्मा वीतरागदेव कहते हैं. प्रभु! मैं हूं उतना ही तू है. आलाहा..! मात्र वस्तु अलग है. बाकी मैं हूं उतना ही तू है और तू है उतना ही मैं हूं. आलाहा..! आलाहा..! मुझमें और तेरेमें ईर्ष नहीं है, प्रभु! पर्यायमें तुने ईर्ष किया है, अब छोड दे. मुझसे तुने पर्यायमें ईर्ष किया, प्रभु! वह ईर्ष छोड दे. वह ईर्ष छोडनेकी ताकत तुझमें है. आलाहा..! और मेरेमें ज्ञे अनंती पर्यायें लुयी, ऐसी तेरेमें अनंती होगी, ऐसा सामर्थ्य तेरेमें है. आलाहा..! ऐसा आत्मा. कहा न?

‘यह पंचम भाव पवित्र है,...’ आलाहा..! उदयभाव रागादि है वह तो अपवित्र है. दूसरे चार भाव पवित्र है, परंतु अक समयकी स्थिति है. भवे क्षायिकभाव हो, परंतु अक समयकी स्थिति है. आलाहा..! यह परमपारिणामिक भाव त्रिकावी भगवान आदि और अंत बिनाकी चीज.. आलाहा..! पवित्र है. महापवित्र है. ‘महिमावंत है.’ आलाहा..! पूर्ण चीज है वह पवित्र है और महा महिमावंत है. आलाहा..! ‘उसका आश्रय करनेसे...’ उसका आश्रय करनेसे, उस ओर जानेसे, उसका अवलंबन लेनेसे ‘शुद्धिके प्रारंभसे लेकर...’ शुद्धिकी शुरुआत वहांसे होती है. आलाहा..! परिपूर्णा पंचम पारिणामिकभाव, परम पारिणामिकभावके आश्रयसे शुद्धि उत्पन्न होती है.

समकितकी उत्पत्ति वहांसे होती है. आह्लाह..! समकितकी उत्पत्तिका वह बहुत कलता था न? कान्ति ईश्वर. मुंभर्णवावा. पत्र निकालता है न. उसमें बहुत विभता था, शुभभावसे ऐसा होता है, ऐसा होता है, ऐसा होता है. लेकिन ईस बार सुना, 'पस्सदि जिणसासन' ओक घण्टा उसकी परिभाषा सुनी. उसके बाद वह स्वयं बोला बेचारा, महाराज! हमें भावद्विगंबर आपने बनाया. हम द्रव्यद्विगंबर-संप्रदायके द्विगंबर थे. उसने विरोध किया था, निंदा करता था मासिक पत्रमें. लोग बैठे थे और बोला था. मुझे-हमे भावद्विगंबर बनाया. हमारा द्रव्यद्विगंबरमें जन्म था. परंतु द्विगंबर क्या चीज है? द्विगंबर कोई पक्ष या संप्रदाय नहीं है. कोई पंथ नहीं है. आह्लाह..! वह तो वस्तुका स्वरूप है. वह क्या कहते हैं? वह तो वस्तुका स्वरूप है.

पंचम पारिणामिक भाव, और उसकी परिणति वह जैनशासन. आह्लाह..! जैनशासन पर्याय है. जैनशासन गुण-द्रव्य नहीं. आह्लाह..! क्या कला समझे? धर्म कलो कि जैनशासन, वह पर्याय है. वह पंचम पारिणामिक भाव नहीं. पंचम पारिणामिक भावके आश्रयसे प्रगट लुयी पर्याय, वह जैनशासन है. आह्लाह..! उसे कोई शुभभाव या इलाने संलननकी जरूरत है ऐसा नहीं है. ऐसा भगवान पूर्ण शक्ति और सत्तावान, पूर्ण सत्तावान.. आह्लाह..! पूर्ण सत्तावावा. प्रत्येक गुणमें पूर्ण सत्तावावा. आह्लाह..! उसकी जो पूर्ण पर्याय हो उसको परमात्मा-कार्यपरमात्मा कहते हैं. आह्लाह..! ईस दशाको कारणपरमात्मा (कहते हैं). पूर्ण परमात्मा शक्तिवंत महा भगवान भंडार कारणपरमात्मा है. उसके अवलंबनसे, उसके आश्रयसे केवलज्ञान आदि होता है, वह कार्यपरमात्मा है. आह्लाह..! ऐसी पंचप्रलभलधारीदेवने धुन लगायी है.

मुमुक्षु :- रहस्य तो आपने बोला.

उत्तर :- आह्लाह..! 'पंचम भाव पवित्र है, महिमावंत है. उसका आश्रय करनेसे शुद्धिके प्रारंभसे...' शुद्धि-सम्यग्दर्शनकी शुद्धिके प्रारंभसे, त्रिकावीक आश्रयसे शुद्धिआत होती है. आह्लाह..! बाकी कोई क्रियाकांडसे शुद्धिआत होती नहीं. आह्लाह..! ऐसा कठिन लगता है. 'उसका आश्रय करनेसे शुद्धिके प्रारंभसे...' शुद्धिकी प्रारंभता. शुभ-अशुभ शुद्धि नहीं है. शुभभाव और अशुभभाव शुद्धि नहीं है. आह्लाह..! 'शुद्धिके प्रारंभसे लेकर पूर्णता प्रगट होती है.' केवलज्ञान उसके अवलंबनसे उत्पन्न होता है. सम्यग्दर्शन उसके अवलंबनसे, सम्यग्ज्ञान उसके अवलंबनसे, सम्यक्चारित्र उसके अवलंबनसे, शुक्लध्यान उसके अवलंबनसे, केवलज्ञान उसके अवलंबनसे (प्रगट होता है). आह्लाह..! जो कोई पूर्ण दशा, प्रारंभसे लेकर पूर्णता प्रगट होती है. उसके सिवा कोई आश्रय करने लायक नहीं है. (श्रोता :- प्रमाण वचन गुरुदेव!)